



प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात उर्दू लेखक एवं समालोचक शमसुरहमान फ़ारुकी  
की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

फ़ारुकी के बिना उर्दू अदब अधूरा – गोपी चंद नारंग

नई दिल्ली। 6 जनवरी 2021; साहित्य अकादेमी ने आज प्रख्यात उर्दू लेखक एवं समालोचक शमसुरहमान फ़ारुकी की स्मृति में आभासी मंच पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया, जिसमें देश के जाने-माने लेखकों और विद्वानों ने सहभागिता की। सभा के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराम ने शमसुरहमान फ़ारुकी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्हें याद करते हुए उन्होंने कहा कि फ़ारुकी साहब उर्दू ही नहीं सभी भारतीय भाषाओं के एक बड़े लेखक थे। उन्होंने उर्दू में दास्तानगोई की परंपरा को पुनर्जीवित किया।

इस अवसर पर उनकी बेटी और उर्दू की प्रोफेसर मेहर अफ़शाँ फ़ारुकी ने कहा कि हमारे पास उनके जीवन के हर पल की यादें साथ हैं और हम उन्हें हमेशा अपनी स्मृति में बसाए रखेंगे। अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष गोपी चंद नारंग ने कहा कि फ़ारुकी के बिना उर्दू अदब अधूरा है। उनका लिखा हुआ पीढ़ियों तक साथ रहेगा। हिंदी के प्रख्यात आलोचक एवं कवि राजेंद्र कुमार ने उन्हें इलाहाबाद का 'फ़क्र' मानते हुए कहा कि वे अदब और तहज़ीब के सच्चे नुमाइंदे थे और उन्होंने अपनी कलम की गरिमा हमेशा बनाए रखी।

इस सभा में अनीसुरहमान, महमूद फ़ारुकी, बेग़ एहसास, हरीश त्रिवेदी, शमीम तारिक, अनीस अशफ़ाक, अहमद महफूज, इब्ने कँवल, निज़ाम सिद्दीकी, जयंत परमार, ज़मान आजुर्दा एवं साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक एवं प्रख्यात उर्दू शायर शीन काफ़ निज़ाम ने भी शमसुरहमान फ़ारुकी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभी ने फ़ारुकी साहब को उर्दू अदब का युगांतकारी व्यक्तित्व मानते हुए कहा कि उनके जाने से एक युग की समाप्ति हो गई है।

(के. श्रीनिवासराम)